Toppersnotes
Unleash the topper in you

UPPSC
Prelims

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (UPPSC)

भाग – 3

कला एवं संस्कृति

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	भारतीय वास्तुकला	1
2	मंदिर वास्तुकला	12
3	भारतीय मूर्तिकला	26
4	भारतीय चित्रकला	33
5	भारत में नृत्य शैलियाँ	43
6	भारत में संगीत	51
7	भारतीय धर्म और दर्शन	61
8	भारतीय साहित्य और भाषा	71
9	भारतीय रंगमंच और कठपुतली कला	79
10	भारतीय हस्तशिल्प	84
11	भारत में सांस्कृतिक संस्थान और पुरस्कार	93
12	भारत में युद्ध कलाएँ	101
13	भारत में यूनेस्को–विश्व धरोहर स्थल	104
14	भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत	117
15	प्राचीन भारत के प्रमुख विश्वविद्यालय	122

1
CHAPTER

भारतीय वास्तुकला

भारतीय वास्तुकला ने सिंधु घाटी के ग्रिड-योजनाबद्ध ईंटों से बने शहरों से लेकर मौर्य स्तंभों, गुप्त मंदिरों, सल्तनतकालीन मेहराबों, मुगल उद्यानों और औपनिवेशिक पुनरुत्थान तक, स्वदेशी तकनीकों और बाहरी प्रभावों का निरंतर सम्मिश्रण किया है। संरक्षण और सामग्रियों में बदलाव ने नए प्रकार के भवनों (स्तूप, गुफाएँ, मस्जिदें, महल) को जन्म दिया है, जबकि आधुनिक और टिकाऊ दृष्टिकोण विकसित होती सांस्कृतिक, तकनीकी और पर्यावरणीय प्राथमिकताओं को दर्शाते हैं। आज की संरचनाएँ सदियों के बहुस्तरीय नवाचार और पहचान का परिष्कृत रूप हैं।

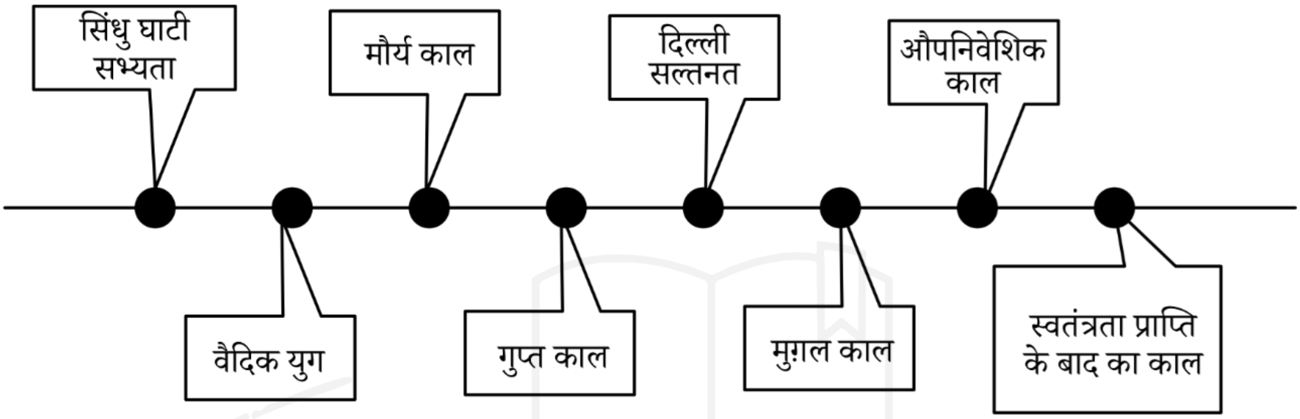

सिंधु घाटी सभ्यता

- भारत का इतिहास सिंधु घाटी सभ्यता से प्रारंभ होता है जिसे हम **हड़प्पा सभ्यता** के नाम से भी जानते हैं।
- यह **सभ्यता लगभग 2500 ईस्वी पूर्व दक्षिण एशिया के पश्चिमी भाग** मैं फैली हुई थी,जो कि वर्तमान में पाकिस्तान तथा पश्चिमी भारत के नाम से जाना जाता है।
- सिंधु घाटी सभ्यता मिस्र,मेसोपोटामिया,भारत और चीन की चार सबसे बड़ी प्राचीन नगरीय सभ्यताओं से भी अधिक उन्नत थी।
- 1920 में, भारतीय पुरातत्त्व विभाग द्वारा किये गए सिंधु घाटी के उत्खनन से प्राप्त अवशेषों से हड़प्पा तथा मोहनजोदडो जैसे दो प्राचीन नगरों की खोज हुई।
- भारतीय पुरातत्त्व विभाग के तत्कालीन डायरेक्टर जनरल **जॉन मार्शल** ने सन 1924 में सिंधु घाटी में एक नई सभ्यता की खोज की घोषणा की।

- **सिंधु घाटी सभ्यता के तीन चरण हैं-**
    1. प्रारंभिक हड़प्पाई सभ्यता (3300ई.पू.-2600ई.पू. तक)
    2. परिपक्व हड़प्पाई सभ्यता (2600ई.पू-1900ई.पू. तक)
    3. उत्तर हड़प्पाई सभ्यता (1900ई.पु.-1300ई.पू. तक)
- **मुख्य स्थल:**
    - ✓ **हड़प्पा (पंजाब, पाकिस्तान)** → कब्रिस्तान H संस्कृति एवं दफ़न प्रथाएं, अन्नागार, कार्य मंच और समाधि स्थल।
    - ✓ **मोहनजोदड़ो (सिंध, पाकिस्तान)** →विशाल स्नानागार, सभा भवन, विशाल आवासीय भवन और पुरोहित-राजा की प्रतिमा।
    - ✓ **रोपड़ (पंजाब)** → प्रारंभिक समाधि प्रथाओं के प्रमाण, सतलुज नदी के किनारे स्थित।

- ✓ **कालीबंगा (राजस्थान)** → अग्निकुण्ड और हल से जुते हुए खेत, कृषि के सबसे प्राचीन प्रमाण, यहाँ विशाल स्नानागार नहीं मिला।
- ✓ **लोथल (गुजरात)** → एक महत्वपूर्ण समुद्री स्थल, यहाँ से गोदी, अन्नागार, मनका-निर्माण कारखाना और मुद्राएँ मिली है। अब यहाँ राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर (NMHC) स्थित है।
- ✓ **रंगपुर (गुजरात)** → उत्तर हड़प्पा स्थल, धान की खेती के प्रमाण।
- ✓ **धोलावीरा (गुजरात)** →पत्थर से निर्मित अद्वितीय त्रिभागीय नगर योजना, उन्नत जल प्रबंधन प्रणाली के लिए प्रसिद्ध।
- ✓ **राखीगढ़ी (हरियाणा)** → यहाँ से 5,000 वर्ष पुरानी जल प्रबंधन तकनीक का साक्ष्य मिला है।

स्थल	**खोजकर्त्ता (वर्ष)**	**अवस्थिति**	**महत्वपूर्ण खोजें**
हड़प्पा	दयाराम साहनी (1921)	पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के मोंटगोमरी जिले में, रावी नदी के तट पर	मानव शरीर की बलुआ पत्थर की मूर्तियाँ, अन्नागार, बैलगाड़ी
मोहनजोदड़ो (मृतकों का टीला)	राखलदास बनर्जी (1922)	पाकिस्तान के सिंध प्रांत के लरकाना जिले में, सिंधु नदी के तट पर	विशाल स्नानागार, अन्नागार, कांस्य नर्तकी, पशुपति महादेव की मुहर, दाढ़ी वाले व्यक्ति की पत्थर की मूर्ति, बुने हुए कपड़े
सुत्कान्गेडोर	स्टीन (1929)	पाकिस्तान के बलूचिस्तान में, दाश्त नदी के किनारे	हड़प्पा और बेबीलोन के बीच व्यापारिक केंद्र
चन्हुदड़ो	एन. जी. मजूमदार (1931)	सिंध प्रांत में, सिंधु नदी के तट पर	मनका निर्माण की दुकानें, बिल्ली का पीछा करते कुत्ते के पदचिन्ह
आमरी	एन. जी. मजूमदार (1935)	सिंधु नदी के तट पर	हिरण के अवशेष
कालीबंगन	बी. बी. लाल / घोष (1953)	राजस्थान में घग्गर नदी के किनारे	अग्नि वेदिकाएँ, ऊँट की हड्डियाँ, लकड़ी का हल
लोथल	एस. आर. राव (1953)	गुजरात में, भोगवा नदी के किनारे, कैम्बे की खाड़ी के निकट	मानव निर्मित बंदरगाह, गोदीवाड़ा, चावल की भूसी, अग्नि वेदिकाएँ, शतरंज जैसा खेल
सुरकोतदा	जे. पी. जोशी (1964)	गुजरात	घोड़े की हड्डियाँ, मनके
बनावली	आर. एस. विष्ट (1974)	हरियाणा के हिसार जिले में	मनके, जौ, हड़प्पा-पूर्व एवं परिपक्व हड़प्पा संस्कृति के साक्ष्य
धौलावीरा	आर. एस. विष्ट (1985)	गुजरात में कच्छ के रण में	उन्नत जल प्रबंधन प्रणाली, जल कुंड

ToppersNotes
Unleash the topper in you

- **नगरीय योजना**
  - ✓ शहरों को **आयताकार सड़कों के ग्रिड** के रूप में बनाया गया था, जो समकोण पर मिलती थीं।
  - ✓ नगर दो भागों में बँटे थे- **ऊपरी नगर (गढ़/किला)** और **निचला नगर** तुलनात्मक रूप से नीचा, पर नियोजित एवं दोनों ऊँचे चबूतरों पर बने हुए थे।
  - ✓ सड़कों और इमारतों को ढलान के साथ बनाया गया, ताकि सुगम जल निकासी संभव हो सके।
- **निर्माण सामग्री और तकनीकें**
  - ✓ अधिकतर निर्माण-कार्यों में समान आकार की पक्की ईंटें और मिट्टी/चूना गारा, कुछ स्थलों पर जिप्सम गारे का प्रयोग किया गया था ।
  - ✓ धोलावीरा में ईंटों के स्थान पर पत्थर की चिनाई का उपयोग किया गया था, जो अद्वितीय स्थापत्य तकनीक का संकेत देता है।
  - ✓ इस सभ्यता में मेहराब या स्तंभों का कोई प्रमाण नहीं मिलता है।
- **आवासीय संरचना**
  - ✓ घर आमतौर पर केंद्रीय आँगन के चारों ओर बने बहु-कक्षीय ढांचे में होते थे, जिनकी छतें समतल होती थी।
  - ✓ अधिकांश घरों में निजी कुएँ और स्नानागार थे और गोपनीयता हेतु दरवाजे/खिड़कियाँ मुख्य सड़कों की ओर कम ही खुलती थी।
  - ✓ सीढ़ियों का उपयोग यह दर्शाता है, कि कुछ घरों में ऊपरी मंज़िलें भी थी।
  - ✓ कोई केंद्रीय महल या मंदिर परिसर न होना एक समतावादी समाज का संकेत देता है।
- **स्वच्छता और जल प्रबंधन**
  - ✓ प्रत्येक घर की ढकी हुई **नालियाँ मुख्य सीवर से जुड़ी** थीं और इन्हें सुलभता से सफाई योग्य बनाया गया था ।
  - ✓ नियमित अंतराल में बने अपशिष्ट हौज एवं व्यापक कुओं का उपयोग क्रमशः अपशिष्ट एवं जल वितरण प्रबंधन हेतु किया जाता था।
  - ✓ **धोलावीरा: यहाँ वर्षा जल संचयन** हेतु परस्पर जुड़े टैंक और नहरें होती थी।
- **सार्वजनिक एवं रक्षात्मक संरचनाएँ**
  - ✓ नगरों को किलेबंद ईंटों की दीवारों से सुरक्षित किया गया था, ताकि बाढ़ और आक्रमण से बचाव हो सके ।
  - ✓ अन्नागार ऊँचे चबूतरों पर बनाए गए थे, जिनमें वायु-नलिकाएँ कीटों से बचाव, वेंटिलेशन एवं नमी नियंत्रण और अन्न संरक्षण के लिए बनाई गई थी।
  - ✓ **विशाल स्नानागार (मोहनजोदड़ो)** एक केन्द्रीय जलाशय था, जिसके चारों ओर कक्ष बने हुए थे। इसका उपयोग संभवतः **सामुदायिक अनुष्ठान या सार्वजनिक स्नान** के लिए किया जाता था।
- **गढ़ बनाम निचला नगर**

गढ़	**निचला नगर**
यह **पश्चिमी भाग** में स्थित था	यह **पूर्वी भाग** में स्थित था
यह निचले नगर से छोटा होता था	यह गढ़ से बड़ा होता था
इसमें बड़े भवन जैसे अन्नागार, प्रशासनिक भवन, स्तंभयुक्त सभागार (बड़े हॉल/सभा भवन), **शासकों एवं कुलीनों के आवास**, आँगन आदि यहाँ पाए जाते थे	यह छोटे एक-कक्षीय मकान, जो संभवतः **कार्यशील वर्ग** के लोगों के लिए होते थे।

मौर्यकालीन वास्तुकला (322–185 ई.पू.)

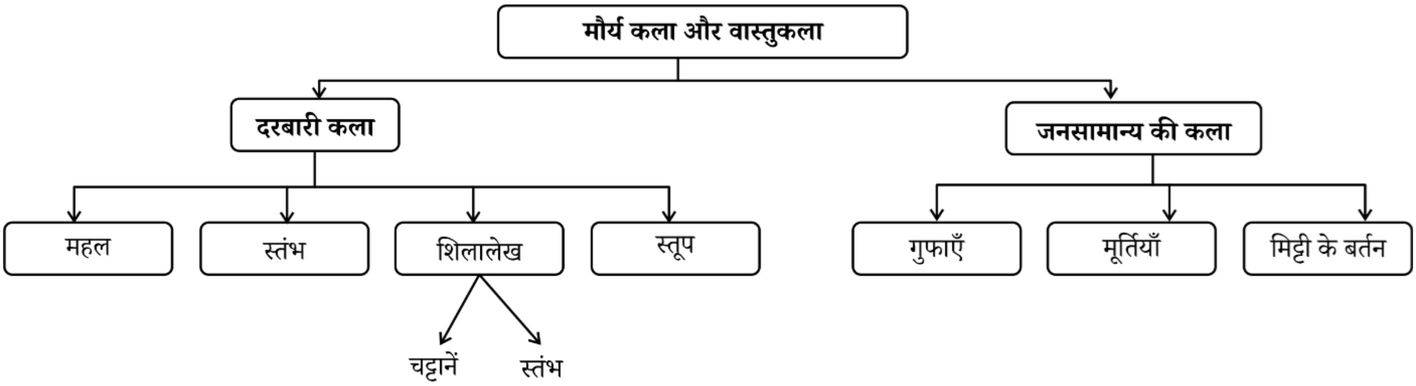

1. राजकीय कला (राज्य प्रायोजित)

- **महल**
  - ✓ **अशोक का महल:** कुम्रहार में स्थित, यह **बहु-मंज़िला एवं लकड़ी की संरचना** थी, इसमें एक विशाल केंद्रीय स्तंभ था, जो स्थापत्य वैभव को दर्शाता है।
  - ✓ **चंद्रगुप्त का महल:** पाटलिपुत्र में स्थित, यह आकेमेनिड पर्सेपोलिस(हखामनी ईरानी वास्तुकला) के आधार पर निर्मित था (जैसा कि यूनानी राजदूत मेगस्थनीज़ ने वर्णन किया), जो राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रभाव का प्रतीक था।
- **अशोक स्तंभ**

  - ✓ ये **एकाश्म चुनार बलुआ पत्थर से बने स्तंभ मौर्य वास्तुकला की मुख्य विशेषता** थे, जिनका उद्देश्य राजसत्ता और साम्राज्यिक अधिकार को प्रदर्शित करना था।
  - ✓ प्रत्येक स्तंभ के चार प्रमुख घटक थे-
    - **स्तंभ-दंड:** यह एकाश्म पत्थर से निर्मित हैं।
    - **शीर्ष भाग:** कमल या घंटे के आकार का (घंटाकार आकृति ईरानी प्रभाव से प्रेरित)।
    - **अभिलंब:** इसके शीर्ष के ऊपर वृत्ताकार/आयताकार पट्टिका है।
    - **पशु आकृति:** इसके अभिलंब पर सिंह, बैल, हाथी आदि की मूर्तियाँ हैं।
  - ✓ उदाहरण: **लौरिया नंदनगढ़, रामपुरवा (बैल), संकिसा एवं सारनाथ (सिंह)।**
- **राष्ट्रीय प्रतीक**

सत्यमेव जयते

  - ✓ **सारनाथ का सिंह-स्तंभ शीर्ष** भारत का राष्ट्रीय प्रतीक है। इसमें एक-दूसरे से जुड़े हुए चार सिंह शक्ति और गौरव के प्रतीक हैं।
  - ✓ सिंहों के नीचे अभिलंब पर अंकित पशु, बुद्ध के जीवन के विभिन्न चरणों का संकेत हो सकते हैं।
  - ✓ **धर्मचक्र (24 तीलियों वाला चक्र)** यह धर्म के शाश्वत चक्र का प्रतीक है।
  - ✓ प्रतीक के नीचे अंकित **"सत्यमेव जयते"** का अर्थ है "सत्य की ही विजय होती है," जो नैतिक शक्ति और न्याय को दर्शाता है।

Unleash the topper in you

अशोक स्तंभ बनाम आकेमेनिड स्तंभ

पहलू	अशोक स्तंभ (तीसरी शताब्दी ई.पू.)	आकेमेनिड स्तंभ (छठी-चौथी शताब्दी ई.पू.)
उद्देश्य	**अशोक स्तंभों का उद्देश्य सम्राट अशोक के धम्म संबंधी आदेशों का प्रचार और नैतिक मूल्यों का प्रसार करना था।**	इन स्तंभों का प्रयोग विशाल महलों/अनुष्ठानिक संरचनाओं को समर्थन देने के लिए किया जाता था।
सामग्री	यह स्थानीय बलुआ पत्थर से निर्मित था	इनका निर्माण मुख्यतः चूना पत्थर/बलुआ पत्थर से किया जाता था
संरचना	इसका एकाश्म स्तंभ-दंड एकाश्म पत्थर से और शीर्षभाग कमल या घंटे के आकार का है	इन स्तंभों में बहु-पत्थरीय नालियों वाले स्तंभ-दंड और जटिल शीर्षभाग पाए जाते हैं
धार्मिक संबंध	यह बौद्ध धर्म से सम्बंधित था	इन स्तंभों का संबंध पारसी धर्म/फारसी संस्कृति होता है
शीर्षभाग	इनके शीर्षभाग पर यथार्थवादी पशु (सिंह, बैल) आकृतियाँ अंकित है	इनके शीर्षभाग पर पौराणिक जीव (ग्रिफिन, युगल बैल) अंकित होते हैं
संदेश	ये स्तंभ नैतिक और धार्मिक आचार-विचार सम्बन्धी उपदेशों का माध्यम थे	ये स्तंभ शाही वैभव और दिव्य अधिकारों का प्रदर्शन का माध्यम थे
पशु चित्रण	यह प्राकृतिक शैली में बनाये गये हैं	इनमें पशु आकृतियाँ शैलीबद्ध या पौराणिक दिखाई देती हैं
स्थापना	यह प्रायः खुले स्थानों में एकाकी रूप में स्थापित है	इन स्तंभों की स्थापना प्रायः महल परिसरों के भीतर स्थापित की जाती थी

➢ **स्तूप (स्मारक टीले)**

✓ परिभाषा: ठोस अर्धगोलाकार गुम्बद, जिनमें **अवशेष और अस्थियाँ रखी जाती थीं** तथा ये बौद्ध धर्म से पहले भी अस्तित्व में थे, किन्तु बौद्धों द्वारा इन्हें लोकप्रिय बनाया गया ।

✓ संरक्षक: सम्राटों (जैसे अशोक) से लेकर सामान्य भक्तों और शिल्पकार संघों तक ने इन्हें संरक्षण प्रदान किया तथा कुछ अभिलेखों में कारीगरों के नाम भी अंकित (उदाहरण: पितलखोरा में 'कन्हा') मिलते है।

✓ **मुख्य विशेषताएँ**:

- ईंटों की कोर, जिसके बाहर जली हुई ईंट या मिट्टी की परत होती थी।
- ड्रम: बेलनाकार ढांचा, जिसके ऊपर हर्मिका (रैलिंग मंच) और छत्री (छतरीनुमा संरचना) होती थी।
- प्रदक्षिणा पथ: स्तूप का परिक्रमा पथ, जो लकड़ी की रेलिंग से घिरी होती थी और तोरणों (सज्जित द्वारों) से सुसज्जित होती थी।
- प्रतीकात्मक शिल्पांकन: इन पर **कमल, हाथी, जातक कथाएँ जैसे चित्रात्मक** रूपांकन होते थे।

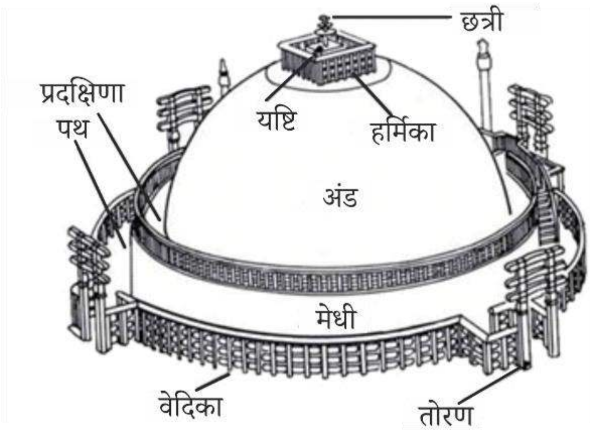

✓ **प्रमुख स्थल:**

- **सांची (विश्व धरोहर स्थल):**
  - ☞ यह बेतवा नदी के पश्चिम में (भोपाल के निकट) स्थित है।
  - ☞ इसमें **तीन प्रमुख स्तूप** हैं: स्तूप-1: बुद्ध के अवशेष, स्तूप-2: दस अर्हतों के अवशेष, स्तूप-3: सारिपुत्र एवं महामौद्गलायन के अवशेष
  - ☞ अशोक द्वारा निर्मित सिंह स्तंभ, स्तूप के दक्षिण भाग में स्थित है तथा इस स्तूप का ऊपरी प्रदक्षिणा पथ अद्वितीय है।
- अन्य प्रमुख स्थल: भरहुत, बोधगया, अमरावती, नागार्जुनकोंडा।

2. **लोकप्रिय कला (स्थानीय संरक्षण प्राप्त)**

➢ **शैल-खंड गुफाएँ**

✓ **उत्पत्ति**: प्रथम शैल-खंड गुफाओं का निर्माण तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में सम्राट अशोक के संरक्षण में आजीवक संप्रदाय के लिए किया गया था और बाद में इन गुफाओं का उपयोग बौद्धों तथा जैनों द्वारा भी किया जाता था ।

✓ **प्रमुख स्थल**: बिहार स्थित बाराबर की पहाड़ियाँ (लोमस ऋषि, सुदामा, विश्वकर्मा, करण चौपर गुफाएँ) एवं नागार्जुनी पहाड़ियाँ इसके प्रमुख स्थल हैं (वदथि-का-कुभा, वेप-का-कुभा, गोपी-का- कुभा)।

✓ **पॉलिशयुक्त** आंतरिक भाग: यह अत्यंत परिष्कृत एवं समतल की गई चट्टानी सतहें होती है जो "मौर्यकालीन पॉलिश" की विशिष्टता को दर्शाती हैं तथा इन गुफाओं को एक गंभीर, ध्यानपूर्ण कक्ष का रूप प्रदान किया गया हैं।

✓ **सज्जित प्रवेश द्वार:** इसमें अर्धवृत्ताकार "चैत्य-मेहराब" आकृति को आयताकार अथवा गोलाकार द्वारों के ऊपर उत्कीर्ण किया गया है जो बाद के बौद्ध चैत्यगृहों के लिए प्रारूप (प्रोटोटाइप) सिद्ध हुआ।

✓ **सरल विन्यास**: एकल-कक्षीय सभा-कक्ष अथवा लघु विहार, जिनके भीतर मठवासी जीवन एवं ध्यान हेतु न्यूनतम सज्जा होती थी।

✓ **पश्चात् अनुकूलन**: नासिक स्थित पांडव लेनी (1वीं शताब्दी ईसा पूर्व – 3वीं शताब्दी ईस्वी) जैसे पश्चातवर्ती स्थलों पर बहु-कक्षीय विहारों एवं मूर्तिशिल्प युक्त चैत्यगृहों का विस्तार किया गया।

➢ **मृदभांड एवं मूर्तिकला**

✓ **उत्तरी काले पॉलिशदार मृदभांड**: अपनी दीप्तिमान या चमकदार परत एवं अत्यधिक परावर्तक सतह के लिए प्रसिद्ध यह मृदभांड अत्यंत उत्तम गुणवत्ता का होता था तथा शहरी केन्द्रों में प्रयुक्त होता था।

✓ **मूर्तिकला अलंकरण:** यह स्तूपों, तोरणों तथा गुफाओं के अग्रभाग पर विद्यमान होता था और इसकी शैल्पिक शैली वर्णनात्मक थी तथा इसमें मानव आकृतियों वाले देवताओं को प्रत्यक्ष रूप से चित्रित करने से परहेज़ किया जाता था।

Unleash the topper in you

<u>मौर्य-उत्तर एवं गुप्त काल (दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व – छठी शताब्दी ई.)</u>

➢ **चैत्य एवं विहार**

चैत्यगृह	विहार
➢ **चैत्यगृहों का उपयोग प्रार्थना सभागृह के रूप** में किया जाता था।	➢ **विहार बौद्ध तथा जैन भिक्षुओं के लिए आवासीय स्थल** होते थे।
➢ ये **स्तूपों के साथ निर्मित** होते थे।	➢ **विहारों में स्तूप नहीं** होते थे।
➢ इनका प्रवेशद्वार छोटा तथा आयताकार होता था, जो एक मेहराबदार सभागृह की ओर खुलता था, जिसका अंतिम भाग अर्धवृत्ताकार होता था तथा इस अर्धवृत्ताकार छोर पर एक स्तूप स्थापित होता था।	➢ इनकी संरचना में एक मुख्य कक्ष, एक सभा कक्ष तथा भोजन कक्ष सम्मिलित होते थे। ➢ इन कक्षों से चट्टानों में गहराई तक ध्यान के लिए कक्ष निर्मित किए जाते थे।

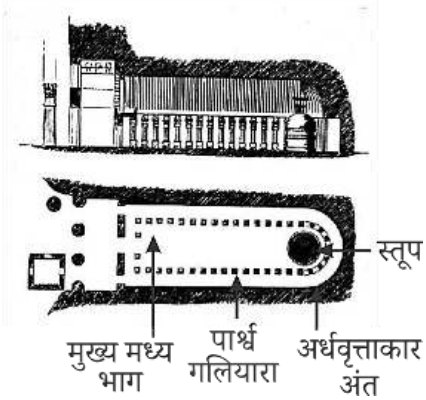

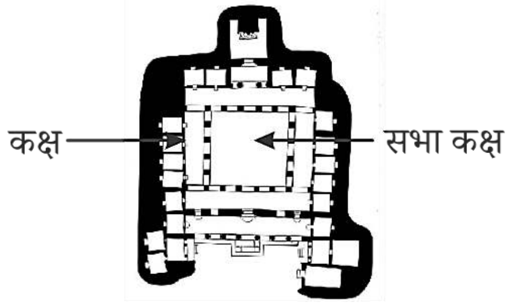

- **पश्चिमी भारत की शैलियाँ:**
  - ✓ **अर्धवृत्ताकार, मेहराबदार चैत्यगृह:** ये अजंता, भाजा और पितलखोरा में पाए जाते हैं और इनमें अर्धवृत्ताकार हॉल तथा मेहराबदार छत होती थी।
  - ✓ **स्तंभ-रहित अर्द्धवृत्ताकार हॉल:** महाराष्ट्र के ठाणे-नांदूर जैसे स्थलों पर इसके प्रमुख उदाहरण मिलते हैं।
  - ✓ **समतल छत वाले चतुर्भुजाकार हॉल:** यह कोंडिविट में स्थित हैं और इन हॉलों में पिछले भाग में वृत्ताकार कक्ष होते हैं।
  - ✓ शैल-खंडन के लिए बेसाल्ट पत्थर का प्रयोग जटिल नक्काशी को संभव बनाता है।
- **प्रमुख पश्चिमी स्थल:**

  - ✓ **कार्ले का चैत्य:** यह विशालतम चैत्यगृह के लिए प्रसिद्ध है, जिसका अग्रभाग अत्यंत अलंकृत है।
  - ✓ **पांडवलेनी (नासिक):** यहाँ के विहार कक्षों में घटाधार स्तंभ शीर्ष हैं।
  - ✓ **गणेशलेनी (जुन्नर) एवं कन्हेरी (मुंबई):** इन स्थलों पर विस्तृत विहार संरचनाएँ विद्यमान हैं।
  - ✓ **भाजा गुफाएँ (पुणे):** एक प्रमुख बौद्ध गुफा स्थल के रूप में प्रसिद्ध हैं।
  - ✓ **बेड़सा गुफाएँ:** सुविकसित संरक्षित स्तंभों एवं शिल्पित सिंहों के लिए जानी जाती हैं।
  - ✓ **कोंडाणे गुफाएँ:** पत्थर में लकड़ी की वास्तुकला की प्रारंभिक नकल का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।
- **पूर्वी भारत की मुख्य विशेषताएँ:**
  - ✓ **गुंटूपल्ली (आंध्र प्रदेश):** यहाँ स्तूप, चैत्यगृह और विहार का एक अद्वितीय समूह पाया जाता है।
  - ✓ **अनकापल्ली एवं धान्यकटक (आंध्र प्रदेश):** विशाल शैल-खंड स्तूपों एवं विहारों के लिए प्रसिद्ध बौद्ध स्थल स्थल हैं।
  - ✓ **उदयगिरि-खंडगिरि (ओडिशा):** मोटे उत्कीर्णनों से युक्त जैन मठवासी गुफाएँ।
  - ✓ **जग्गयापेटा (आंध्र प्रदेश):** अत्यंत अलंकृत स्तूपों वाला महत्त्वपूर्ण स्थल।
  - ✓ **आयक स्तंभ (आंध्र प्रदेश):** नागार्जुनकोंडा के बौद्ध स्तूपों में पाए गए ये स्तंभ, स्तूपों के चारों ओर के मंचों या रेलिंगों को सहारा देते थे और इक्ष्वाकु काल (तीसरी–चौथी शताब्दी ई.) के मठवासी परिसरों में अत्यंत महत्त्वपूर्ण थे।
- **कला एवं अलंकरण:**
  - ✓ प्रारंभिक गुफाओं में अर्धवृत्ताकार चैत्य-मेहराब जैसी सरंचनाएं होती थी, जो आगे चलकर बौद्ध द्वारों का प्रारूप बन गई।
  - ✓ उत्तरवर्ती स्थलों में जातक कथाओं पर आधारित चित्रात्मक शिल्प और बुद्ध, बोधिसत्त्वों तथा स्थानीय लोक देवताओं की मूर्तियाँ सम्मिलित होने लगी ।
  - ✓ **अजंता की भित्तिचित्र कला:** वाकाटक संरक्षण में विकसित क्लासिकल-गुप्त शैली एवं गहन कथात्मकता का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है।
  - ✓ **यक्ष एवं यक्षिणी की आकृतियाँ:** बौद्ध विषयवस्तु के साथ सजावटी तत्वों में सतत बनी रहती हैं।

गुप्त वास्तुकला — "स्वर्ण युग"

1. **शैल-खंड गुफाएँ:**
   - ✓ **अजंता:** इसमें कुल **29 गुफाएँ जिसमे 24 विहार एवं 5 चैत्यगृह सम्मिलित हैं** तथा इनका निर्माण काल दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से 5वीं शताब्दी ईस्वी तक विस्तृत है। इनका संरक्षण वाकाटक शासकों द्वारा किया गया।
   - ✓ **एलोरा:** कुल 34 गुफाओं का एक विस्तृत समूह, जिनमें 17 ब्राह्मण, 12 बौद्ध, एवं 5 जैन गुफाएँ शामिल है। ये 5वीं से 11वीं शताब्दी के मध्य निर्मित हुई तथा इनमें त्रितलीय सभागृह विद्यमान हैं।
   - ✓ **एलीफेंटा:** इसमें कुल सात गुफाएँ है जिनमे 5 हिंदू (मुख्यतः भगवान शिव को समर्पित) एवं 2 बौद्ध गुफाओं का समूह है तथा यहाँ की प्रमुख मूर्तियाँ महेशमूर्ति एवं नटराज है।
   - ✓ **अन्य स्थल:** बाघ (गुप्तकालीन , रंगमहल शिल्पांकन), जूनागढ़, मंडपेश्वर, उदयगिरि (चंद्रगुप्त द्वितीय की वराह मूर्ति)।
2. **स्तूप एवं टेराकोटा (मृत्तिका शिल्प):**
   - ✓ **मौर्योत्तर कालीन पत्थर स्तूप:** समत, रत्नागिरि, मीरपुर खास, गंगा के मैदान के बाहर स्थित देवनीमोड़ी स्तूप आदि।
   - ✓ **मिट्टी की मूर्तियाँ एवं लाल मृदभांड:** आहिच्छत्र, राजगढ़, हस्तिनापुर से प्राप्त हुई।
   - ✓ **टेराकोटा पट्टिकाएँ:** दैनिक जीवन, घरेलू देवताओं एवं प्रकृति से संबंधित दृश्य दर्शाती हैं। ये लोक सौंदर्यबोध की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम थी।
   - ✓ **देवनीमोड़ी स्तूप (गुजरात):** गांधार एवं गुप्त प्रभावों का समन्वय दर्शाता है और यह एक संक्रमणकालीन कला का प्रतिनिधि स्थल है।
3. **प्रमुख मंदिरों के उदाहरण:**
   - ✓ पार्वती मंदिर, (नाचनाकुठार); तेर (महाराष्ट्र); मणियार मठ (राजगृह) आदि।
   - ✓ **भितरगाँव मंदिर (उत्तर प्रदेश):** ईंटों से निर्मित सर्वप्राचीन ज्ञात शिखर मंदिर, जो ऊर्ध्वाधर ऊँचाई की अवधारणा का परिचायक है।
   - ✓ **दशावतार मंदिर, देवगढ़ (उत्तर प्रदेश):** यह प्रारंभिक नागर शैली एवं विकसित शिखर परंपरा के महत्त्वपूर्ण उदाहरणों में से एक है। तथा यह वैष्णव विषयवस्तु का चित्रण करता है।
4. **कलात्मक विशेषताएँ:**
   - ✓ इसी काल में गुफाओं में भित्तिचित्र कला का प्रारंभ हुआ।
   - ✓ शास्त्रीय मूर्तिकला रूपों का समन्वय, गतिशील प्रतीकात्मकता — पाषाण व धातु दोनों माध्यमों में इसका विकास हुआ।
   - ✓ **गुप्त कांस्य मूर्तियाँ:** जैसे सुल्तानगंज बुद्ध — उत्कृष्ट धातु ढलाई, वस्त्रावलंबन एवं सौम्य मूर्तिकाय रूपांकन के लिए प्रसिद्ध है।
   - ✓ **गुप्त कला की प्रमुख विशेषता:** यह स्थिर-लक्षणा शांत, आत्मस्थ भावाभिव्यक्ति, जो आध्यात्मिक उन्नयन का प्रतीक है।
   - ✓ गुप्तकाल में बौद्ध, जैन एवं हिंदू प्रतीकवादों का समानांतर एवं समरस विकास हुआ था।

भारतीय-इस्लामी वास्तुकला (लगभग 12वीं – 18वीं शताब्दी ईस्वी)

1. **सामान्य विशेषताएँ**
   - ✓ धनुषाकार शैली: बाह्य बीम और कीस्टोन के साथ वास्तविक मेहराबों और गुंबदों का समावेश, मस्जिदों के चारों ओर मीनारें।
   - ✓ अलंकरण: अरबी शैली के पैटर्न, सुलेख, ज्यामितीय जालीदार परदे और पित्राड्यूरा जड़ाई; जलमार्गों और फव्वारों के साथ चारबाग उद्यानों (चार-भाग वाले उद्यान) का उपयोग।
   - ✓ सामग्री: ईंट, चूना-गारा, बलुआ पत्थर, संगमरमर आदि का उपयोग।
   - ✓ मिहराब (प्रार्थना स्थल) और मिंबर (मंच) मस्जिद वास्तुकला के अभिन्न अंग बन गए।
   - ✓ इवान (एक खुले पक्ष वाला गुंबददार हॉल) फ़ारसी वास्तुकला से लिया गया।

2. दिल्ली सल्तनत (शाही शैली)

- ✓ **ग़ुलाम (मामलूक) वंश:** इस वंश के प्रमुख स्थापत्य योगदानों में कुतुब मीनार परिसर शामिल है, जिसका निर्माण क़ुतुबुद्दीन ऐबक ने प्रारंभ किया, इल्तुतमिश ने विस्तार किया और फिरोज़ शाह तुग़लक़ ने मरम्मत कराई। इसी काल में निर्मित कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद (लगभग 1197 ई.) में हिंदू-जैन मंदिरों की पुनः प्रयुक्त सामग्री का उपयोग किया गया। बलबन के शासनकाल में मकबरा वास्तुकला में वास्तविक मेहराब जैसे संरचनात्मक नवाचार विकसित हुए।
- ✓ **ख़िलजी वंश (1290–1320):** इस काल के स्थापत्य की विशेषता है- अलाई दरवाजे का निर्माण, जिसमें पहला वास्तविक गुंबद देखने को मिलता है। साथ ही इसमें लाल बलुआ पत्थर और संगमरमर की साज-सज्जा का प्रयोग हुआ।
- ✓ **तुग़लक़ वंश:** इस काल की वास्तुकला ढलवां दीवारों एवं सादे, दुर्गीकृत स्थापत्य ("बैटर वॉल्स"), चार-केंद्रीय मेहराबों (जैसे कि ग़यासुद्दीन तुग़लक़ का मकबरा) के लिए प्रसिद्ध है। तुग़लक़ाबाद का क़िला उनके द्वारा निर्मित दुर्गीकृत नगरों का उत्कृष्ट उदाहरण है।
- ✓ **लोदी वंश:** इस वंश की प्रमुख विशेषता अष्टकोणीय बाग़-मकबरों का निर्माण है, (जैसे—सिकंदर लोदी का मकबरा) जिनमें अलंकरण अपेक्षाकृत साधारण है। इस काल में सार्वजनिक निर्माण कार्यों में सरायें, पुल और बावड़ियाँ शामिल थीं, जिनमें 'गंधक की बावड़ी' (इल्तुतमिश द्वारा निर्मित मानी जाती है) प्रमुख है।

3. प्रांतीय शैलियाँ

- ✓ **बंगाल:** ढलवां छज्जेदार छतों और ईंट/चमकदार टाइलों की सजावट के लिए प्रसिद्ध, जैसा कि क़दम रसूल और अदीना मस्जिद में देखा जा सकता है।
- ✓ **जौनपुर:** अटाला मस्जिद और लाल दरवाज़ा मस्जिद जैसी संरचनाओं में मीनारों की अनुपस्थिति के लिए उल्लेखनीय है।
- ✓ **मालवा:** विपरीत रंगों वाले पत्थरों के अग्रभाग और विशाल मेहराबदार हॉलों की विशेषता, जैसे हिंडोला महल में देखा गया।
- ✓ **दक्कन (बीजापुर):** गुंबदाकार गुम्बद और तीन-मेहराब वाले अग्रभाग, इसका उत्कृष्ट उदाहरण गोल गुम्बद है, जो अपनी "फुसफुसाती गैलरी" के लिए प्रसिद्ध है।
- ✓ **गुजरात शैली:** यह समृद्ध रूप से नक्काशीदार मिंबर और मिहराब के लिए प्रसिद्ध है। जैसा कि अहमदाबाद की जामा मस्जिद में देखा गया। इस शैली में इस्लामी रूपों का हिंदू-जैन अलंकरण से समावेश किया गया।
- ✓ **कश्मीर:** देवदार की लकड़ी और विशिष्ट लकड़ी की मस्जिदें, जिनकी छतें पिरामिडीय होती हैं। जैसे- ख़ानक़ाह-ए-मौला।

4. मुग़ल वास्तुकला

- ✓ **बाबर और हुमायूँ:** बाबर ने प्रारंभिक मुगल मस्जिदों की नींव रखी, जबकि हुमायूँ का मकबरा फ़ारसी-भारतीय स्थापत्य समन्वय, चारबाग़ योजना और द्वैध गुंबद वास्तुकला का प्रथम प्रमुख उदाहरण है। (पहला फ़ारसी-भारतीय समन्वय, चारबाग़, द्वैध गुंबद वास्तुकला का उदहारण है)।
- ✓ **शेर शाह:** शेर शाह का स्थापत्य लोदी और मुगल काल के बीच संक्रमणकालीन शैली का प्रतिनिधित्व करता है, जिसके प्रमुख उदाहरण दिल्ली का पुराना क़िला और सासाराम स्थित शेर शाह का मकबरा हैं।
- ✓ **अकबर:** अकबर के काल में फतेहपुर सीकरी में फ़ारसी, भारतीय और मध्य एशियाई तत्वों से युक्त मिश्रित स्थापत्य शैली का विकास हुआ, जिसके प्रमुख उदाहरण बुलंद दरवाज़ा, पंच महल और इबादत ख़ाना हैं।
- ✓ **जहाँगीर और नूरजहाँ:** इस काल में मकबरा वास्तुकला का विकास हुआ, जिसके प्रमुख उदाहरण सिकंदरा स्थित अकबर का मकबरा और आगरा का एतमाउद्दौला का मकबरा हैं।
- ✓ **शाहजहाँ:** शाहजहाँ का काल संगमरमर और पित्रा-ड्यूरा जड़ाई वाली मुगल वास्तुकला का स्वर्णिम युग माना जाता है, जिसके प्रमुख उदाहरण ताजमहल तथा लाल क़िले का दीवान-ए-ख़ास (मयूर सिंहासन का मंच) हैं।

- ✓ **औरंगज़ेब:** औरंगज़ेब के काल में सादगीपूर्ण और अपेक्षाकृत शुद्ध इस्लामी स्थापत्य शैली के निर्माण हुए, जिनके प्रमुख उदाहरण लाहौर की बादशाही मस्जिद और औरंगाबाद का बीबी का मकबरा हैं।
- ✓ **नागरिक परियोजनाएँ:** मुग़लों ने महत्वपूर्ण नागरिक निर्माण कार्य किए। जैसे जौनपुर में गोमती नदी पर पुल और शेर शाह द्वारा ग्रांड ट्रंक रोड का पुनरुद्धार, पश्चिमी यमुना नहर, जौनपुर पुल आदि।
- ✓ 1784 में, नवाब आसफुद्दोला ने लखनऊ में बड़ा इमामबाड़ा बनवाया, जिसमें इंटरलॉकिंग ईंट तकनीक का उपयोग किया गया, जिससे गारे की आवश्यकता नहीं रही।
- ✓ आसफुद्दोला ने लखनऊ में रूमी दरवाजे का भी निर्माण कराया, जो ईंट से बना था और चूने के पलस्तर से ढंका हुआ था।
- ✓ हश्त-बिहिश्त (आठ भाग योजना) का उपयोग मुग़ल मकबरा वास्तुकला में मानक बन गया (जैसे हुमायूँ का मकबरा, ताजमहल)।
- ✓ झरोखे (बालकनीयुक्त खिड़कियाँ) मुग़ल सौंदर्यशास्त्र में स्थानीय हिंदू शैलियों को सम्मिलित करने हेतु प्रारंभ किए गए।
- ✓ छतरियाँ (गुंबदाकार मंडप) मुग़ल संरचनाओं के शीर्ष पर स्थापित की जाती थीं, जिससे एक विशिष्ट क्षितिज बनता था।

औपनिवेशिक एवं आधुनिक वास्तुकला

1. 16वीं–17वीं शताब्दी – पुर्तगाली बैरोक शैली

- ✓ प्रभाव: इबेरियाई गिरजाघर एवं नागरिक डिज़ाइन, जिसमें मैनरिस्ट और बैरोक शैलियों का स्थानीय अनुकूलनों के साथ मिश्रण हुआ।
- ✓ विशेषताएँ: आंतरिक प्रांगण, गहरे रंगों का प्रयोग , तटीय इमारतों में लेटराइट पत्थर और चूने के प्लास्टर का उपयोग।
- ✓ उदाहरण: सेंट कैथेड्रल एवं बॉम जीसस बेसिलिका (गोवा); दीव किला आदि।

2. 17वीं–18वीं शताब्दी – फ्रांसीसी उपनिवेशीय नगर नियोजन

- ✓ प्रभाव: तर्कसंगत शहरी ग्रिड और नागरिक चौकों का उष्णकटिबंधीय नगर योजनाओं के साथ समन्वय किया गया।
- ✓ विशेषताएँ: यूरोपीय गिरजाघर रूपों का स्थानीय वास्तुशैली के साथ संयोजन, सैरगाह-शैली के नदी तट और नागरिक सौंदर्यशास्त्र के लिए चौड़ी सड़कों का विकास किया गया।
- ✓ उदाहरण: पुदुचेरी (ग्रिड योजना, सैकरेड हार्ट चर्च), चंदननगर
- ✓ सैरगाह शैली के नदी तट और चौड़े बुलेवार्ड नागरिक सौंदर्य के लिए डिज़ाइन किए गए।

3. 19वीं शताब्दी – ब्रिटिश इंडो-गॉथिक पुनरुद्धार

- ✓ प्रभाव: यह विक्टोरियन गॉथिक शिल्पकला का मुग़ल/फ़ारसी अलंकरण के साथ मिश्रण है।
- ✓ विशेषताएँ: नुकीले मेहराब, जालीदार खिड़कियाँ, जालीदार परदे वाले सजावटी अग्रभाग।
- ✓ उदाहरण: विक्टोरिया मेमोरियल (कोलकाता), गेटवे ऑफ इंडिया (मुंबई)।
- ✓ अन्य उदाहरणों में बॉम्बे हाईकोर्ट और सीएसटी रेलवे टर्मिनस शामिल हैं।
- ✓ नागरिक तत्व: घंटाघर, शिखर और रंगीन काँच, जो यूरोपीय प्रतीकवाद को दर्शाते हैं।

4. 1911 के बाद – लुटियन्स की नव-रोमन दिल्ली

- ✓ प्रभाव: ब्रिटिश साम्राज्य के गौरव को दर्शाने हेतु साम्राज्य के लिए शास्त्रीय रोमन एवं बैरोक प्रतीकवाद का प्रयोग।
- ✓ विशेषताएँ: इसके भव्य स्तंभों की श्रृंखलाएं, विशाल गुंबद, अक्षीय दृश्य; पश्चिमी शैलियों का मिश्रण है।
- ✓ उदाहरण: सचिवालय भवन, राष्ट्रपति भवन का विस्तार।
- ✓ लुटियन्स ने हर्बर्ट बेकर के साथ मिलकर मुग़ल चारबाग़ से प्रेरित सममितीय योजनाएँ बनाईं।
- ✓ लाल और क्रीम रंग के धौलपुर बलुआ पत्थर का प्रमुखता से उपयोग किया गया।
- ✓ जलवायु अनुकूलता और सांस्कृतिक समन्वय हेतु जालीदार परदे (छज्जे और छतरियाँ) को शामिल किया गया।

5. 1950–70 के दशक – स्वतंत्रोत्तर आधुनिकतावाद

- ✓ प्रभाव: अंतर्राष्ट्रीय शैली एवं ब्रूटलिज़्म।
- ✓ विशेषताएँ: पायलटिस स्तंभ, खुला कच्चा कंक्रीट, ब्राइस -सोले सनशेड , क्षेत्र आधारित नगर योजना।
- ✓ उदाहरण: चंडीगढ़ कैपिटल कॉम्प्लेक्स (ले कोर्बूज़िए), भारत का सर्वोच्च न्यायालय।
- ✓ इस काल में वास्तु सिद्धांतों को मॉड्यूलर आवास योजनाओं (जैसे दिल्ली विकास प्राधिकरण ब्लॉक) में आंशिक रूप से समाहित किया गया।
- ✓ अनावृत्त कंक्रीट (बेतों ब्रूट) और ज्यामितीय अमूर्तन का प्रयोग।

6. 1970–90 के दशक – पारंपरिक पुनरुत्थान

- ✓ प्रभाव: क्षेत्रीय जलवायु, स्थानीय सामग्री एवं शिल्प पर अधिक जोर दिया गया।
- ✓ विशेषताएँ: आंगन-केंद्रित योजनाएँ, प्राकृतिक शीतलन, स्थानीय पत्थर और ईंट का उपयोग।
- ✓ उदाहरण: आईआईएम अहमदाबाद (लुई कान), कंचनजंघा अपार्टमेंट (चार्ल्स कोरेया)।
- ✓ लोरी बेकर जैसे वास्तुकारों ने कम लागत, टिकाऊ और जन-केंद्रित वास्तुकला को बढ़ावा दिया।
- ✓ थर्मल विनियमन हेतु रैट-ट्रैप बॉन्ड ईंट निर्माण, फिलर स्लैब एवं जालीदार दीवारों का प्रयोग किया गया।

7. 2000 से वर्तमान – टिकाऊ एवं उच्च तकनीकी वास्तुकला

- ✓ **प्रभाव:** हरित भवन मानक एवं डिजिटल डिज़ाइन।
- ✓ **विशेषताएँ:** ऊर्जा-कुशल अग्रभाग, वर्षा जल संचयन, स्मार्ट एचवीएसी प्रणाली, जीवंत दीवारें तथा हरित छतें।
- ✓ **उदाहरण:** सीआईआई-सोहराबजी गोडरेज ग्रीन बिजनेस सेंटर ।
- ✓ प्लैटिनम LEED प्रमाणित परिसरों का उद्भव आईटी एवं शैक्षणिक केंद्रों में हो रहा है।
- ✓ डिजिटल पैरामेट्रिक डिज़ाइन, सौर पैनल एवं हरित छतों को व्यापक रूप से अपनाया गया है।
- ✓ बायोफिलिक वास्तुकला की प्रवृत्ति में पौधों, जल और प्रकाश का आंतरिक भाग में समावेश किया जाता है।

भारतीय वास्तुकला स्थिर नहीं होकर अनुकूलनशील, समावेशी और स्तरित है। यह प्राचीन और भविष्य के मध्य, पवित्र और धर्मनिरपेक्ष के बीच, स्थानीय और वैश्विक के बीच सेतु बनाती है, जिससे यह एक जीवंत धरोहर बन जाती है, जो आत्मा को संरक्षित रखते हुए निरंतर विकसित होती रहती है।

2 CHAPTER मंदिर वास्तुकला

भारत में मंदिर वास्तुकला भारतीय संस्कृति की सबसे विशिष्ट और स्थायी अभिव्यक्तियों में से एक है, जो देश की धार्मिक श्रद्धा, कलात्मक सृजनात्मकता और क्षेत्रीय विविधता को दर्शाती है। यह वास्तुकला दो सहस्राब्दियों से अधिक समय में विकसित हुई है। भारतीय मंदिर केवल पूजा स्थल नहीं हैं, बल्कि ये लौकिक रेखांकन, सांस्कृतिक केंद्र और आध्यात्मिक उत्कर्ष के प्रतीक भी हैं।

A. प्रारंभिक हिंदू मंदिर

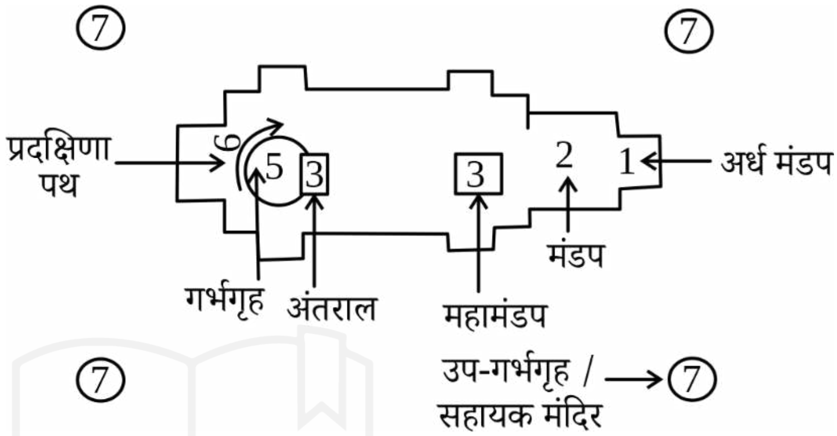

- **ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य:**
  - ✓ ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी से ब्राह्मणीय मंदिर बौद्ध स्तूपों के साथ उभरने लगे, जो मंदिर पूजा और मुख्य देवता की मूर्तियों की स्थापना की बढ़ती लोकप्रियता को दर्शाते हैं।
  - ✓ मंदिरों को गुप्तों शासकों, स्थानीय राजाओं और शिल्पकार संघों द्वारा संरक्षण मिला, जो धार्मिक और राजनीतिक गठबंधन की वृद्धि का संकेत था।
- **मंदिर योजनाएं:**
  - ✓ **संधार:** इसमें कोई आंतरिक प्रदक्षिणा पथ नहीं होता है तथा भक्त बाहरी मंडप के चारों ओर घूमते हैं।
  - ✓ **निरंधार:** यह गर्भगृह के चारों ओर तीन ओर से घिरा हुआ आंतरिक प्रदक्षिणा पथ होता है।
  - ✓ **सर्वतोभद्र:** यह चारों ओर से खुला गलियारा होता है, जो 360° प्रदक्षिणा की अनुमति देता है।
- **वास्तुकला संरचना:**
  - ✓ सामान्यतः इसमें एक मुखमंडप (मुख्य द्वार), मंडप (प्रार्थना कक्ष) और पीछे गर्भगृह (देवता की मूर्ति का कक्ष) होता था।
  - ✓ छतें विभिन्न प्रकार की होती थीं: समतल, ढलवाँ या प्रारंभिक शिखर रूपी गुम्बद।
  - ✓ प्रारंभ में इसमें साधारण अलंकरण होता था : कमल पुष्पों की माला, पुष्प पट्टियाँ, यक्ष-यक्षिणी की मूर्तियाँ आदि।
- **प्रमुख उदाहरण:**
  - ✓ **देवगढ़ (उत्तर प्रदेश):** यह प्रारंभिक गुप्तकाल का बलुआ पत्थर से निर्मित मंदिर है, जिसमें बाह्य संरचना अपेक्षाकृत साधारण है, जबकि दशावतार विषय पर उत्कृष्ट नक्काशीदार पैनल इसकी प्रमुख विशेषता हैं।
  - ✓ **एरण और उदयगिरि (मध्य प्रदेश):** यह छोटी चट्टानों को काटकर बनाए गए निरंधार मंदिर होते हैं, जहाँ नक्काशीदार स्तंभ उल्लेखनीय है ।
  - ✓ नचना **-कुठार (मध्य प्रदेश):** यह गुप्तकालीन मंदिर सर्वतोभद्र योजना पर आधारित है, जिसमें चौकोर गर्भगृह के चारों ओर प्रदक्षिणा पथ का प्रावधान किया गया है।

मंदिर वास्तुकला का विकास

भारत में मंदिर वास्तुकला का विकास मौर्योत्तर काल से प्रारंभ होकर गुप्त काल में परिपक्व हुआ और आगे चलकर नागर, द्रविड़ तथा वेसर शैलियों में विभाजित हुआ। गुप्त काल के दौरान, मंदिर शैली पाँच स्पष्ट चरणों में विकसित हुई, जहाँ सरल, समतल छत वाले मंदिर अलंकृत शिखरों से सुसज्जित जटिल गर्भगृह वाले मंदिरों में विकसित हुए ।

- **चरण I**
  - ✓ इसमें समतल छत वाला वर्गाकार मंदिर निर्मित किया गया।
  - ✓ यह एक निम्न, एकल-**स्तरीय** चबूतरे पर निर्मित होता था।
  - ✓ **उदाहरण: उदयगिरि** की गुफा 5 के मंदिर (मध्य प्रदेश)
- **चरण II**
  - ✓ इसमें एक ऊँचा **चबूतरा** बनाने के लिए आधार को ऊपर उठाया गया।
  - ✓ यह दो मंजिला **मंदिरों** का उद्भव होता है।
  - ✓ इसमें गर्भगृह के **चारों** ओर एक ढका हुए प्रदक्षिणा पथ का निर्माण किया जाता था।
  - ✓ उदाहरण: नचना कुठार (मध्य प्रदेश) का पार्वती मंदिर
- **चरण III**
  - ✓ इसमें समतल छत के स्थान पर एक ऊँचा शिखर बनाया जाता था।
  - ✓ पंचायतन शैली के मंदिरों की शुरुआत इसी से की गई (मुख्य मंदिर के चारों ओर चार सहायक मंदिर)।
  - ✓ **उदाहरण: दशावतार** मंदिर, देवगढ़ (उत्तर प्रदेश); गर्भगृह के ऊपर एक साधारण पिरामिडनुमा शिखर से सुसज्जित।
- **चरण IV**
  - ✓ इसमें शिखर शैली का निरंतर विस्तार हुआ तथा साथ ही गर्भगृह अधिक आयताकार होने लगा।
  - ✓ **उदाहरण:** तेर मंदिर (महाराष्ट्र)
- **चरण V**
  - ✓ इस चरण में उथले **आयताकार** उभारों वाले वृत्ताकार गर्भगृहों का विकास होने लगा।
  - ✓ **उदाहरण: मणियार** मठ (राजगीर, बिहार)

Toppersnotes Unleash the topper in you

B. हिंदू मंदिर के घटक

- **गर्भगृह:**
  - ✓ मुख्य देवता के लिए आंतरिक गर्भगृह, जो प्रारंभ में एक साधारण कक्ष था, लेकिन बाद में इसका विस्तार हुआ।
  - ✓ यह ब्रह्मांड (ब्रह्मांडीय गर्भ) का प्रतीक माना जाता है और आध्यात्मिक अनुभव को बढ़ाने के लिए इसे अंधकारमय रखा जाता है।
  - ✓ यह सामान्यतः पूर्व की ओर उन्मुख होता है, जो प्रकाश और ज्ञान का प्रतीक है।
- **मंडप:**
  - ✓ सामूहिक पूजा और भक्तों के एकत्रीकरण हेतु निर्मित प्रवेश कक्ष या बरामदा होता है।
  - ✓ यह खुला या बंद हो सकता है और उत्तरकाल में अर्ध-मंडप, महामंडप आदि अनेक मंडप विकसित हुए।
  - ✓ यह भक्ति संगीत, नृत्य और प्रवचन जैसी धार्मिक गतिविधियों का केंद्र रहा।

➢ **शिखर / विमान:**
  ✓ मंदिर की छत पर स्थित मीनार उत्तर भारत में वक्राकार शिखर (नागर शैली) और दक्षिण भारत में सोपानात्मक पिरामिड विमान (द्रविड़ शैली) रूप में विकसित हुआ।
  ✓ **उत्तर भारत में** – रेखा-प्रसाद (सीधा शिखर) और फमसाना (मंडपों के ऊपर पिरामिडीय छत) जैसे प्रकार उभरे।
  ✓ **दक्षिण भारत में** – द्रविड़ शैली के विमान, जिनमें अनेक स्तरों पर सूक्ष्म मंदिर-सदृश नक्काशियाँ होती हैं।

➢ **प्रदक्षिणापथ:**
  ✓ परिक्रमा हेतु बंद गलियारा जिसके प्रकारों में निरंधार और सर्वतोभद्र प्रमुख थे।
  ✓ यह ब्रह्मांड की दक्षिणावर्त गति और धर्म के चक्र का प्रतीक माना जाता है।
  ✓ इसे स्तंभों, उभरी हुई पट्टियों या प्रतीकात्मक रूपांकनों से सजाया जाता है, जिससे ध्यान और साधना में सहायता मिलती है।

➢ **वाहन और ध्वज:**
  ✓ मंदिर के गर्भगृह के सामने अक्ष पर देवता का वाहन और ध्वज-स्तंभ स्थापित किया जाता है।
  ✓ वाहन (जैसे – शिव के लिए नंदी, विष्णु के लिए गरुड़ आदि) भक्त और देवता के बीच प्रतीकात्मक संवाद का माध्यम होते हैं।
  ✓ ध्वज स्तंभ धर्म, विजय और देवत्व की उपस्थिति का प्रतीक होता है और मंदिर के मुख्य प्रवेश द्वार से पहले अक्षीय रूप में स्थित होता है।

C. मंदिर वास्तुकला की शैलियाँ

मंदिर वास्तुकला की शैलियाँ
- **नागर शैली**
  - खजुराहो शैली
  - सोलंकी शैली
  - ओडिशा शैली
  - बंगाल शैली
  - असम शैली
  - पर्वतीय शैली
- **द्रविड़ शैली**
- **दक्कन की अन्य वास्तुशैलियाँ**
  - **बेसर शैली**
    - चालुक्य शैली
    - राष्ट्रकूट शैली
    - होयसल शैली
  - **विजयनगर शैली**
  - **नायक शैली**

1. नागर शैली (उत्तर भारत)

➢ **सामान्य विशेषताएँ: (नागर मंदिर शैली)**
  ✓ ऊँचे पत्थर के चबूतरे पर निर्मित इन मंदिरों में प्रायः विशाल चारदीवारी या भव्य प्रवेशद्वार (गोपुरम्) नहीं होते है।
  ✓ प्रायः पंचायतन शैली अपनाई जाती है, जिसके केंद्र में मुख्य मंदिर तथा चार कोनों पर चार सहायक मंदिर होते है।

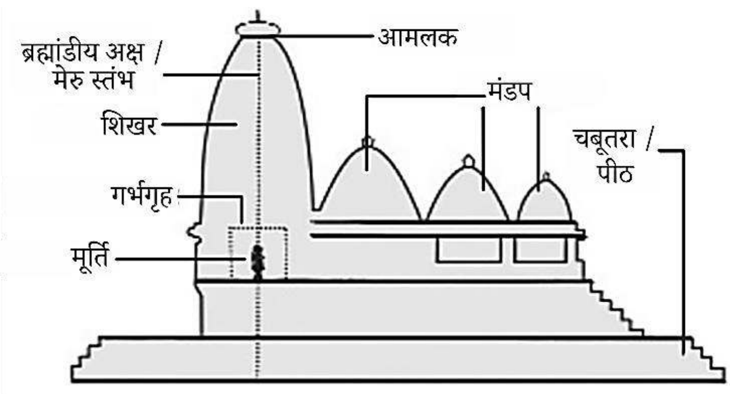

✓ द्रविड़ शैली के विपरीत, गोपुरम अनुपस्थित होते हैंऔर मुख्य शिखर क्षितिज दूर से ही क्षितिज पर प्रमुख रूप से दिखाई देता है।

✓ गुजरात जैसे चुनिंदा क्षेत्रों में जटिल नक्काशीदार तोरणों (धनुषाकार द्वारों) का उपयोग देखने को मिलता है।

➢ **ऊर्ध्वाधर संरचना:**

✓ **चबूतरा:** ये मंदिर का आधार मंच होता है, जिसकी पवित्रता बनाये रखने के उद्देश्य से इसे ऊँचा बनाया जाता है।

✓ **गर्भगृह:** यह मुख्य देवता का निवास स्थान होता है।

✓ **आमलक:** गर्भगृह के ऊपर रखा गया एक धारीदार पत्थर का चक्र, जो सूर्य या ब्रह्मांडीय फल का प्रतीक है तथा यह दिव्य ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करता है। यह कलश के नीचे स्थित होता है।

✓ **कलश:** मंदिर के शीर्ष पर रखा गया कलश जो, समृद्धि, पूर्णता और दिव्यता का प्रतीक होता है।

➢ **शिखर के प्रकार :**

✓ **लैटिना (रेखा-प्रसाद):** यह एक वर्गाकार समतल से ऊपर उठा हुआ चिकना घुमावदार टॉवर होता है।

✓ **फमसाना:** इसमें मंडपों के ऊपर स्थित सीढ़ीदार, पिरामिडीय छत होती है।

✓ **वल्लभी:** यह आयताकार, वैगन की छत के समान, बौद्ध चैत्य हॉल से प्रेरित होता है।

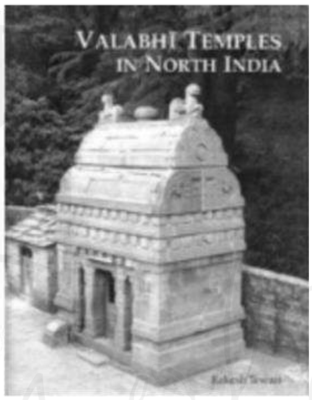

Unleash the topper in you

➢ **क्षेत्रीय विशेषताएँ**

✓ **मध्य भारत**

- **दशावतार मंदिर, देवगढ़ (6वीं शताब्दी प्रारंभिक):** इसमें एक उत्कृष्ट लैटिन शिखर और विष्णु के शेषशयन (सर्प पर विश्राम करते हुए विष्णु) और गजेंद्रमोक्ष (हाथी को बचाते हुए विष्णु) जैसे रूपों का नक्काशीदार रूपांकन किया गया है।

✓ **खजुराहो, मध्य प्रदेश (चंदेल वंश, 10वीं–11वीं शताब्दी):**

- **लक्ष्मण मंदिर (954 ई.):** नागर शैली का उत्कृष्ट उदाहरण, जिसके शिखर के शीर्ष पर प्रमुख आमलक और कलश स्थित हैं।
- **कंदरिया महादेव मंदिर (1003–1035 ई.):** बहु-शिखर समूह (क्लस्टर्ड शिखर) योजना पर आधारित मंदिर, जो अपनी मिथुन (श्रृंगारिक) मूर्तिकला के लिए प्रसिद्ध है।

✓ **मोढेरा सूर्य मंदिर, गुजरात (सोलंकी वंश, 1026 ई.):**

- इसका गर्भगृह पूर्वमुखी है, जो विषुवत सूर्योदय के अनुसार समरेखित है और इसके सूर्य कुंड में 108 लघु-मंदिरों के साथ सीढ़ीनुमा जलाशय होता है।

- ✓ **चौसठ योगिनी मंदिर, मुरैना, मध्य प्रदेश (11वीं शताब्दी):**
  - यह वृत्ताकार समतल तथा 64 देवी मंदिरों सहित खुला मंदिर होता है, जिसे आधुनिक भारतीय संसद भवन की प्रेरणा माना जाता है।
- ✓ **असम - कामाख्या मंदिर (8वीं–17वीं शताब्दी):**
  - यह नीलाचल गुम्बद शैली से बना है इसमें मूर्ति के स्थान पर योनि आकृति युक्त गर्भगृह, पंचरथ समतल, तांत्रिक देवी-देवताओं की मूर्तियाँ उत्कीर्ण होती है।
- ✓ **बंगाल**
  - **पाल–सेन कालीन मंदिर:** ऊंचे घुमावदार शिखर जिन पर बड़े आमलक लगे हुए हैं।
- ✓ **टेराकोटा ईटों से बने मंदिर (17वीं शताब्दी):** इन मंदिरों में बांग्ला छत शैली का प्रयोग किया गया, जिसके प्रमुख प्रकार एक-छाला, दोई-छाला, चार-छाला और आठ-छाला हैं। **ओडिशा (कलिंग शैली):**
  - **अनुक्रम:** रेखा-देउल (गर्भगृह/मुख्य देवालय), पीढा-देउल (सभा या जगमोहन), खाखरा-देउल (आयताकार संरचना)।
  - **प्रसिद्ध मंदिर :** जगन्नाथ मंदिर (पुरी), लिंगराज मंदिर, भुवनेश्वर (सोमवंशी वंश, 11वीं शताब्दी)
  - कोणार्क सूर्य मंदिर (1240 ई.): यह मंदिर रथ-आकार की योजना पर आधारित है, जिसमे 12 जोड़ियों में नक्काशीदार पत्थर के पहिए निर्मित हैं ।

क्या आप जानते हैं?

श्री जगन्नाथ मंदिर, पुरी के पवित्र कोषागार रत्न भंडार को 46 वर्षों बाद फिर से खोला गया है।

- ✓ **पहाड़ी और पर्वतीय परंपराएँ**
  - **लकड़ी की बनावट वाले मंदिर:** इनमे नक्काशीदार स्तंभ वाली ढलानदार छतें होती है, एवं इनमे प्राकृतिक स्थलाकृतियों के साथ समन्वयात्मक रूप देखने को मिलता है ।
  - **पत्थर के अनुकूलन:** यह कश्मीरी मंदिरों में धूसर चूना पत्थर और राखल चिनाई युक्त सीढ़ीदार पिरामिडनुमा छतें होती है| (मार्तंड सूर्य मंदिर)।
  - **कार्कोट वंश (कश्मीर):** पंड्रेथन मंदिर – इसमें बाहर की ओर झुकी हुई नुकीली आकृति होती है एवं यह गांधार और स्थानीय शैलियों का मिश्रण होता है।
  - **चंबा (हिमाचल):** महिषासुरमर्दिनी और नरसिंह की गुप्तोत्तर कालीन पत्थर की मूर्तियाँ इसमें शामिल है एवं इसमें तांबा-जस्ता मिश्रधातु का उपयोग किया गया है।
  - **हिडिम्बा मंदिर (मनाली):** यह मंदिर लकड़ी और पत्थर से निर्मित पैगोडा शैली की छत वाला हिमालयी मंदिर है, जो वन क्षेत्र में स्थित वर्गाकार गर्भगृह के लिए प्रसिद्ध है।

2. द्रविड़ शैली (दक्षिण भारत)

विशेषताएँ:

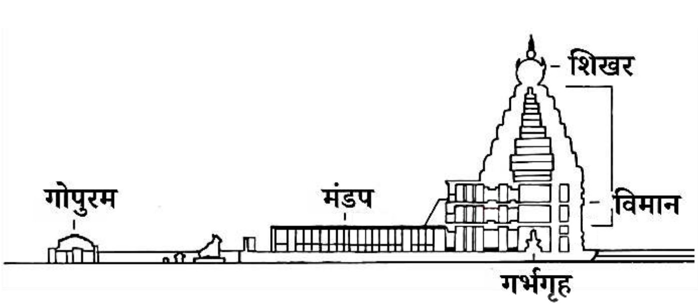

- ➢ **परिसर और प्रवेशद्वार:**
  - ✓ इसमें मंदिरों को ऊँची दीवारों वाले परिसरों में बनाया जाता है, जिससे एकांत वातावरण बना रहता है।
  - ✓ इसका मुख्य प्रवेशद्वार एक भव्य गोपुरम के रूप में होता है, जिसके दोनों ओर नक्काशीदार द्वारपालों की मूर्तियाँ होती हैं।
  - ✓ देवताओं, राक्षसों और पौराणिक प्राणियों की प्लास्टर की आकृतियाँ गोपुरम को सुशोभित करती हैं।

- **जल संरचनाएँ:**
  - ✓ विशाल मंदिर जलाशय या कुंड परिसर का अभिन्न हिस्सा होते हैं।
  - ✓ पुष्करणी या कल्याणी जैसे कुंड पवित्र माने जाते हैं और मंदिर उत्सवों में प्रयुक्त होते हैं।
  - ✓ अनुष्ठानिक स्नान, जल जुलूस और जलयात्रा उत्सव (जैसे- तपोत्सवम) मंदिर के तालाबों से जुड़े होते हैं।
- **मुख्य घटक:**
  - ✓ **गर्भगृह:** यह मंदिर का केंद्र होता है, जहाँ मुख्य देवता प्रतिष्ठापित होते हैं।
  - ✓ **विमान:** इसमें गर्भगृह के ऊपर का मुख्य शिखर होता है, सामान्यतः यह सीढ़ीदार पिरामिड आकार में होता है।
  - ✓ **मंडप:** यह सभा या अनुष्ठानों के लिए उपयोग किया जाने वाला एक स्तंभयुक्त हॉल होता है।
  - ✓ **शिखर:** शीर्ष तत्व या गुंबद, जिसे दक्षिण में स्तूपिका कहा जाता है।
  - ✓ इसकी अन्य विशेषताओं में इसमें सहायक मंदिर होता है, और इसमें रसोई (पाकशाला) और यात्रियों के विश्राम गृह शामिल होते हैं।
- **योजना एवं आकार विविधताएँ:**
  - ✓ विमान योजनाएँ पाँच प्रकार की होती हैं: वर्गाकार (कूट), आयताकार (शाला), अण्डाकार (गज-पृष्ठ), वृत्ताकार (वृत्त) और अष्टकोणीय (अष्टाश्र), जिनका चयन देवता की प्रतिमा के आधार पर किया जाता है।
  - ✓ **स्थपति** (मंदिर वास्तुकार) यह मंदिर के लेआउट और दिशा के लिए आगम और वास्तु शास्त्र में उल्लिखित कड़े नियमों का पालन करते थे।
  - ✓ **अधिरचनाओं** में सामान्यत: तल (मंजिलें) होते हैं, जिनमें से प्रत्येक लघु मंदिरों (कूट, शाला) या भित्तिस्तंभों द्वारा चिह्नित होते है।
- **क्षेत्रीय केंद्र:**
  - ✓ **कांचीपुरम्, तंजावुर, मदुरै और कुंभकोणम्** द्रविड़ मंदिरों के आसपास प्रमुख शहरी केंद्रों के रूप में उभरे।
  - ✓ **चिदंबरम:** यह नटराज मंदिर के लिए प्रसिद्ध है, जो ब्रह्मांडीय नृत्य का प्रतीक है।
  - ✓ **महाबलीपुरम:** इसमें प्रारंभिक पल्लव कालीन शैलकृत मंदिर और रथ मंदिर (एकाश्म मंदिर) शामिल होते हैं।
  - ✓ **श्रीरंगम:** यह भारत का सबसे बड़ा क्रियाशील मंदिर परिसर है, जो अपनी बहु-गोपुरम संरचना के लिए प्रसिद्ध है।
- **राजनीतिक भूमिका:**
  - ✓ 8वीं से 12वीं शताब्दी तक, मंदिर परिसर प्रशासनिक और भू-स्वामित्व केंद्रों के रूप में भी कार्य करते थे।
  - ✓ मंदिर की दीवारों पर अंकित अभिलेखों में दान, कर और सामाजिक नियम मिलते हैं, जो इतिहास के महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं।

2.1 प्रमुख द्रविड़ वास्तुकला (राजवंशवार)

- **पल्लव वास्तुकला (लगभग दूसरी से नवीं – सदी ई.)**
  - ✓ **उत्पत्ति:** पल्लवों की राजनीतिक शक्ति आंध्र–दक्षिणी क्षेत्र से उभरकर तमिलनाडु तक विस्तारित हुई, और उन्होंने तमिलनाडु में पाषाण (शैलकृत एवं संरचनात्मक) मंदिर वास्तुकला के विकास में अग्रणी भूमिका निभाई।
  - ✓ **चार चरण:**
    - **महेन्द्र समूह:** सबसे प्राचीन शैलकृत मंडपों का निर्माण इन्हीं के समय में हुआ इसमें मंडगपट्टू शिलालेख में ईंट, लकड़ी या गारे के उपयोग का दावा नहीं किया गया है।

- **नरसिंह समूह:** इसमें अलंकरण युक्त शैलकृत मंदिरों का निर्माण किया गया एवं यह महाबलीपुरम में पंच पांडव रथ (धर्मराज, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव) मंदिरों के निर्माण के लिए प्रसिद्ध है।
- **राजसिंह समूह:** इसने प्रथम स्वतंत्र संरचनात्मक मंदिर-निर्माण किया। महाबलीपुरम में शोर मंदिर, कांचीपुरम में कैलाशनाथ मंदिर इसके प्रमुख उदहारण हैं।
- **नंदिवर्मन समूह:** छोटे मंदिर जिनमें अधिकांशतः प्रारंभिक द्रविड़ मुहावरों का अनुसरण किया गया है। इस समय तक मंदिर-निर्माण में नवीनता कम होने लगती है।

✓ **महाबलीपुरम (यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल)**

- **पंच पांडव रथ:** यह नरसिंहवर्मन प्रथम (630-668 ईस्वी) द्वारा द्रविड़ शैली में निर्मित पाँच शैल मंदिर हैं।
- **गुफा मंदिर:** यह वराह, कृष्ण, पंच पांडव, महिषासुरमर्दिनी आदि गुफा मंदिर, जो पहाड़ियों को काटकर बनाये गये है तथा इनमें सिंह-स्तंभ मंडप हैं।
- **खुले आसमान में उभरी हुई आकृतियाँ:** "गंगा अवतरण" प्रतिमा (अर्जुन/भगीरथ का प्रायश्चित) जो 27×9 मीटर में फैली है।
- शोर **मंदिर परिसर:** शिव और विष्णु को समर्पित तीन मंदिर (दो छोटे, एक बड़ा), जहाँ विष्णु की अनंतशयन प्रतिमा देखने को मिलती है तथा प्रारंभिक गोपुरम और जलाशय के साक्ष्य शोर मंदिर समूह से मिलते है।
- **वराहमंडप गुफा:** यह गुफा अर्जुन की तपस्या वाली प्रतिमा के पीछे स्थित है तथा इसमें विष्णु के वराहअवतार की मूर्ति में उत्कीर्णन सूअर की थूथन का यथार्थवादी चित्रण उल्लेखनीय है। युग्म सिंह-स्तम्भ यहाँ की अन्य अद्वितीय विशेषता है। ।

➢ **चोल वास्तुकला**

✓ **प्रारंभिक चरण:** इसके प्रारंभिक चरणों में दीवारों पर असंख्य 'गणों' (सेवारत आकृतियों) वाले छोटे आकार के मंदिर बनाये गये। उदाहरणों में विजयालय चोलिस्वर (नर्थमलाई) शामिल हैं।

✓ **शाही चरण:**

- **बृहदेश्वर मंदिर (तंजावुर, 1010 ई.):** यूनेस्को समूह के "महान जीवित चोल मंदिरों" का एक भाग जिसमें अखंड अष्टकोणीय स्तूपिका सहित पिरामिडनुमा विमान देखने को मिलता है तथा यह प्रमुख देवता शिव को समर्पित है।
- **अन्य उत्कृष्ट कृतियाँ:** ऐरावतेश्वर (दारासुरम), गंगैकोंड चोलपुरम (राजेन्द्र प्रथम द्वारा)
- **अबथसहायेश्वर मंदिर (तंजावुर, तमिलनाडु):** इस मंदिर को अपनी विरासत के संरक्षण के लिए 2023 के यूनेस्को विशिष्ट पुरस्कार के लिए चुना गया।

बेसर और दक्कन क्षेत्रीय शैलियाँ

➢ बेसर शैली उत्तर की नागर परंपरा (वर्गाकार/क्रूसीफॉर्म आधार) और दक्षिण की द्रविड़ शैली (स्तरीय पिरामिडनुमा विमान) का मिश्रण है, जिसके शीर्ष पर वक्र रेखीय शिखर होता है। इस शैली में खुले प्रदक्षिणा पथ, खराद से बने स्तंभ और समृद्ध अलंकृत द्वार व छतें होती हैं, जो उत्तर-दक्षिण के स्थापत्य तत्वों का सुंदर संगम है।

✓ **बादामी (वातापि)**

- यह नागर (वक्र शिखर) और द्रविड़ (मूर्तिकला की समृद्धि) शैलियों का मिश्रण होता है, और इसमें खुला परिक्रमा पथ होता है।
- इसमें शैलकृत और संरचनात्मक दोनों प्रकार के मंदिर शामिल होते हैं इसमें छठी शताब्दी के प्रारंभिक द्रविड़ मंदिर इसके उदाहरण हैं।
- इसमें स्तंभयुक्त बरामदे और उभरी हुई पट्टियाँ प्रस्तुत की गई, जो बौद्ध, जैन और हिंदू धर्म को जोड़ती हैं।